बाबाजी का भोग

रामधन अहीर के द्वार पर एक साधु आकर बोला - "बच्चा तेरा कल्याण हो, कुछ साधु पर श्रद्धा कर।"

रामधन ने जा कर स्त्री से कहा - "साधु द्वार पर आए हैं, उन्हें कुछ दे दे। "

स्त्री बर्तन मांज रही थी, और इस घोर चिंता में मग्न थी कि आज भोजन क्या बनेगा, घर में अनाज का एक दाना भी न था। बैसाख का महीना था। किन्तु यहाँ दोपहर ही को अंधकार छा गया था। उपज सारी की सारी खलिहान से उठ गयी। आधी महाजन ने ले ली, आधी ज़मींदार के प्यादों ने वसूल की, भूसा बेचा तो बैल के व्यापारी से गला छूटा, बस थोड़ी-सी गाँठ अपने हिस्से में आयी। उसी को पीट-पीटकर एक मन-भर दाना निकाला था। किसी तरह चैत का महीना पार हुआ। अब आगे क्या होगा। क्या बैल खाएंगे, क्या घर के प्राणी खाएंगे, यह ईश्वर ही जाने। पर द्वार पर साधु आ गया है, उसे निराश कैसे लौटाएं, अपने दिल में क्या कहेगा।

स्त्री ने कहा - "क्या दूं? कुछ तो रहा नहीं"

रामधन - "जा, देख तो मटके में, कुछ आटा-वाटा मिल जाए तो ले आ।"

स्त्री ने कहा - "मटका झाड़-पोंछ कर तो कल ही चूल्हा जला था। क्या उसमें बरकत होगी?"

रामधन - "तो मुझसे तो यह न कहा जाएगा कि बाबा घर में कुछ नहीं है। किसी के घर से मांग ला।"

स्त्री - "जिससे लिया उसे देने की नौबत नहीं आयी, अब और किस मुँह से माँगू?"

रामधन - "देवताओं के लिए कुछ अँगौवा निकाला है न वही ला, दे आऊँ।"

स्त्री - "देवताओं की पूजा कहाँ से होगी?"

रामधन - "देवता माँगने तो नहीं आते? समाई होगी करना, न समाई हो न करना।"

स्त्री - "अरे तो कुछ अंगौवा भी पंसेरी दो पंसेरी है? बहुत होगा तो आध सेर। इसके बाद क्या फिर कोई साधु न आएगा? उसे तो जवाब देना पड़ेगा।"

रामधन - "यह बला तो टलेगी, फिर देखी जाएगी।"

स्त्री झुंझलाकर उठी और एक छोटी-सी हांडी उठा लायी, जिसमें मुश्किल से आधा सेर आटा था। वह गेहूँ का आटा बड़े यत्न से देवताओं के लिए रखा हुआ था। रामधन कुछ देर खड़ा सोचता रहा, तब आटा एक

कटोरे में रख कर बाहर आया और साधु की झोली में डाल दिया।

महात्मा ने आटा लेकर कहा- "बच्चा अब तो साधु आज यहीं रमेंगे। कुछ थोड़ी-सी दाल दे, तो साधु का भोग लग जाय। "

रामधन ने फिर आ कर स्त्री से कहा। संयोग से दाल घर में थी। रामधन ने दाल, नमक, उपले जुटा दिए। फिर कुएं से पानी खींच लाया। साधु ने बड़ी विधि से बाटियां बनायीं, दाल पकायी और आलू झोली में से निकाल कर भुरता बनाया। जब सब सामग्री तैयार हो गयी, तो रामधन से बोले - "बच्चा, भगवान के भोग के लिए कौड़ी-भर घी चाहिए। रसोई पवित्र न होगी, तो भोग कैसे लगेगा?"

रामधन - "बाबाजी, घी तो घर में न होगा।"

साधु - "बच्चा, भगवान का दिया तेरे पास बहुत है। ऐसी बातें न कह।"

रामधन - "महाराज, मेरे गाय-भैंस कुछ नहीं हैं, घी कहां से होगा?"

साधु - "बच्चा, भगवान के भंडार में सब कुछ है जाकर मालकिन से कहो तो?"

रामधन ने जा कर स्त्री से कहा - "घी मांगते हैं, मांगने को भीख, पर घी बिना कौर नहीं धंसता।"

स्त्री - "तो इसी दाल में से थोड़ी ले कर बनिए के यहां से ला दो। जब सब किया है तो इतने के लिए क्यों नाराज़ करते हो?"

घी आ गया। साधुजी ने ठाकुरजी की पिंडी निकाली, घंटी बजायी और भोग लगाने बैठे। खूब तन कर खाया, फिर पेट पर हाथ फेरते हुए द्वार पर लेट गए। थाली, बटली और कड़छुली रामधन घर में मांजने के लिए उठा ले गया।

उस रात रामधन के घर रोटी नहीं पकी। खाली दाल पका कर ही पी ली।

रामधन लेटा, तो सोच रहा था - "मुझसे तो यही अच्छे।"

अभ्यास

1. रामधन की स्त्री का नाम क्या हो सकता है? उसने कैसे कपड़े पहने होंगे?
2. साधु का क्या नाम होगा? उसके कपड़ों के बारे में लिखो।
3. रामधन के खलिहान में जो भी पैदा हुआ उस सब का क्या हुआ?
4. किन वाक्यों से पता लगता है कि साधु का आना रामधन के लिए एक मुसीबत बन गया था?
5. रामधन की स्त्री साधु को खाना खिलाने के बारे में क्या सोचती है?
6. रामधन के यहां खाना खाने के लिए साधु ने क्या-क्या तरीके अपनाए।
7. रामधन ने साधु को खाना क्यों दे दिया?
8. अगर रामधन के घर साधु की जगह कोई और व्यक्ति खाना मांगने आया होता तो क्या वह उसे खाना देता?

9. अगर तुम साधु होते तो क्या करते?

10. रसोई व खाने-पीने से जुड़े कई शब्द इस कहानी में हैं। उन्हें ढूंढकर नीचे लिखो :

बर्तन, भोजन, अनाज

11. क) इस कहानी में कई शब्द ऐसे हैं जिनके बीच में छोटी-सी लाइन है जैसे- मार-मार कर आदि। शब्दों या शब्दों के हिस्सों को दोहरा कर कई नए शब्द बनते हैं। उनमें कुछ नए शब्द जोड़कर भी नए-नए शब्द बनते हैं। तुम भी कहानी में से व अपने मन से नए-नए शब्द बनाओ। उनके बदलते अर्थ के बारे में भी सोचो।

	शब्द	अर्थ
1.	मार-मार कर	खूब मार कर।
2.	रो-रो कर	
3.	चाय-वाय	चाय इत्यादि
4.	चाट-वाट	
5.	मन-भर	लगभग एक मन
6.	हल्का-सा	
7.	गाय-भैंस	
8.	झाड़-पोंछ	सफाई

ख) अपने वाक्य बनाओ :

बरकत, अँगौवा, समाई, बाटी, पिंडी, तन कर खाना, संयोग,

ग) बहुवचन बनाओ। कुछ शब्दों के बहुवचन में दो रूप हैं। इन दोनों रूपों का अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग करो।

एकवचन	बहुवचन	का,के, की, ने आदि से पहले आने वाले रूप
घोड़ा	घोड़े	घोड़ों
घड़ा		
मटका		
देवता	देवता	देवताओं
प्रजा		
भ्राता		
महात्मा		

● कहानी में आ (ा) में खत्म होने वाले शब्द ढूंढो। उनके बहुवचन बनाओ।

कहते हैं कि निज़ाम नाम का एक साधारण भिश्ती कुछ देर के लिए हिन्दुस्तान का बादशाह बना था। कोई कहता है कि वह दो दिन के लिए हिन्दुस्तान के राज-सिंहासन पर बैठा था, तो कोई कहता है कि वह दो घंटे के लिए सिंहासन पर बैठा था।

आखिर ऐसा कैसे हुआ? पानी भरने का काम करने वाला एक आदमी अचानक थोड़ी देर के लिए बादशाह कैसे बन गया? क्या उसने कोई लड़ाई जीती थी? या राज्य हथियाने की साजिश की थी? नहीं। उसने सिर्फ एक डूबते हुए बादशाह की जान बचाई थी। वह बादशाह था हुमायूं।

एक बार हुमायूं की सेना पर दूसरे एक राजा ने ज़बरदस्त हमला कर दिया। हुमायूं के सैनिक जान बचाने को यहां-वहां भागे। हुमायूं खुद घबरा के दौड़ा और कर्मनासा नाम की नदी में कूद गया। उसने सोचा वह तैर के पार हो जाएगा और भाग निकलेगा। पर, नदी में बड़ी तेज़ बाढ़ थी। हुमायूं तैर नहीं पाया। वह डूबने लगा।

इतने में निज़ाम ने देखा एक आदमी डूब रहा है। उसने तुरन्त अपने मश्क में हवा भरी और नदी में कूद गया। (मश्क चमड़े के उस थैले को कहते थे जिसमें पानी भर कर जगह-जगह पहुंचाया जाता था।) निज़ाम अपना फूला हुआ मश्क लेकर हुमायूं के पास पहुंचा और मश्क का सहारा देकर हुमायूं को किनारे तक ले आया।

हुमायूं निज़ाम का बहुत एहसानमन्द था। उसने कहा, "जो मांगोगे तुम्हें दूंगा।"

तब निज़ाम ने यह मांगा कि उसे दो घंटे (या दो दिन) के लिए हिन्दुस्तान का बादशाह बना दिया जाए। जुबान देकर हुमायूं मुकर नहीं पाया और उसने निज़ाम को सिंहासन पर बैठा दिया। तुम जानते होगे कि जो बादशाह बनता है वह अपने नाम से सिक्के जारी करता है। पुराने सिक्के पर उस समय के राजा रानियों के चेहरे व नाम खुदे होते थे। क्या तुमने कभी देखे हैं? खैर, तो निज़ाम ने भी बादशाह बनने पर अपने नाम से सिक्के जारी किए। पर, मज़े की बात यह कि उसने सोने, चांदी के नहीं, चमड़े के सिक्के जारी किए। आखिर चमड़े के थैले की मदद से ही तो एक बादशाह की जान बची थी।

- निज़ाम ने किसकी जान बचाई और कैसे?
- अगर तुम्हें दो दिन के लिए सरपंच बना दिया जाए तो तुम क्या करोगी?
- और अगर स्कूल के बड़े गुरूजी या बड़ी बहनजी बन जाओ, तब?

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो।

1. हुमायूं नदी में क्यों कूदा ?
2. हुमायूं किस नदी में कूदा था।
3. हुमायूं को नदी में से किसने निकाला ?
4. निजाम ने चमड़े के सिक्के ही क्यों जारी किये। सोचकर लिखो।
5. मश्क क्या है? तथा उसकी उपयोगिता क्या है?
6. जुबान देकर हुमायूं मुकर नहीं पाया। इस वाक्य का क्या मतलब है? लिखो।
7. जब भी कोई सवाल पूछा जाता है तो सवाल के अंत में (?) प्रश्नवाचक चिन्ह लगाया जाता है। इस पाठ में ऐसे चिन्ह लगे वाक्यों को छांटकर लिखो।
8. विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखो।

जीत	डूबना	तेज
सहारा	आया	फूला

एक खेल खेलो–

1– इस खेल को अपने गुरूजी/बहनजी या एक या ज्यादा भी साथियों के साथ खेल सकते हो।

2– इस खेल को शुरू करने के पहले कोई एक विषय चुन लो। जैसे– नदी, पहाड़, जंगल, घर आदि में से कोई एक।

3– अब इनमें से किसी एक विषय पर उससे संबंधित कोई दस–दस शब्द सभी साथी कागज पर लिख लें।

4– जब सभी साथी शब्द लिख चुके हों तो एक–एक व्यक्ति बताता जाए कि उसने क्या लिखा। पता करो कितने ऐसे शब्द हैं जो ज्यादा लोगों ने लिखें हैं।

प्रश्न– पैराग्राफ पढ़कर वर्तनी की गल्तियाँ सुधारकर लिखो।

बहुत दीनों की बात है। एक गाव में एक कीसान रहता था। कीसान के पास दो बेल थे। बेलों के गले में एक–एक घंटी बँधी थी। कीसान बेलों से खेति करता था। किसान की पत्नि बेलों को पानि पिलाती और चारा डालती थी। दोनों बेलों को बहुत प्यार करते थे। बेल कीसान की झोपड़ी की सोभा थे।

प्रश्न– नीचे दी गई लाइनें पढ़कर वर्तनी की गल्तियाँ छांटकर सही लिखो।

मछलि जल कि रानी है। जिवन उसाका पनि है।
हाथा लगेना से डर जती है। बहर निकाली मर जाती है।

गलत	सही
मछलि	मछली

प्रश्न– नीचे लिखे शब्दों के अक्षर ढूंढकर गोला बनाओ। हर शब्द से एक वाक्य बनाओ।

लड़का
लड़के
गाय
गायें
पुस्तक
पुस्तकें
माता
माताएँ
ऋतु
ऋतुएँ
चिड़िया
चिड़ियाँ

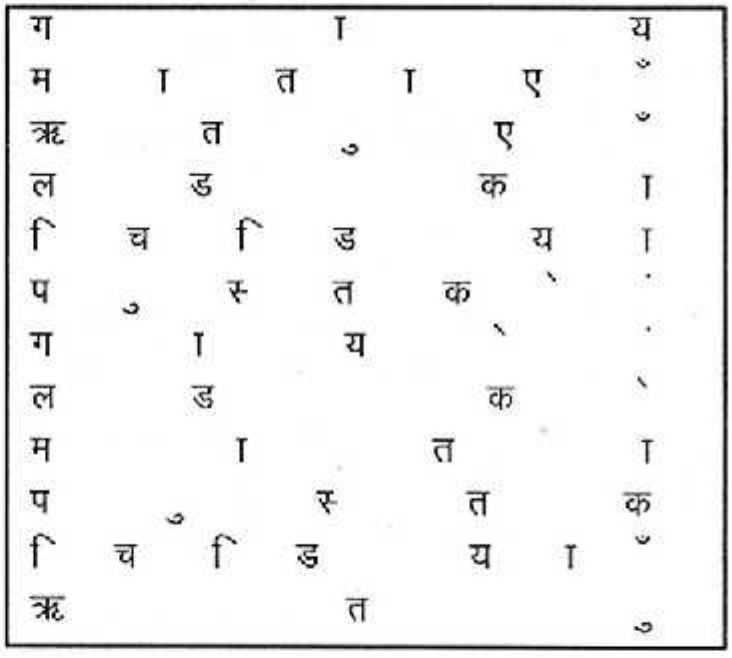

वाक्य – लड़का खेलता है। _____

लड़के खेलते हैं। _____

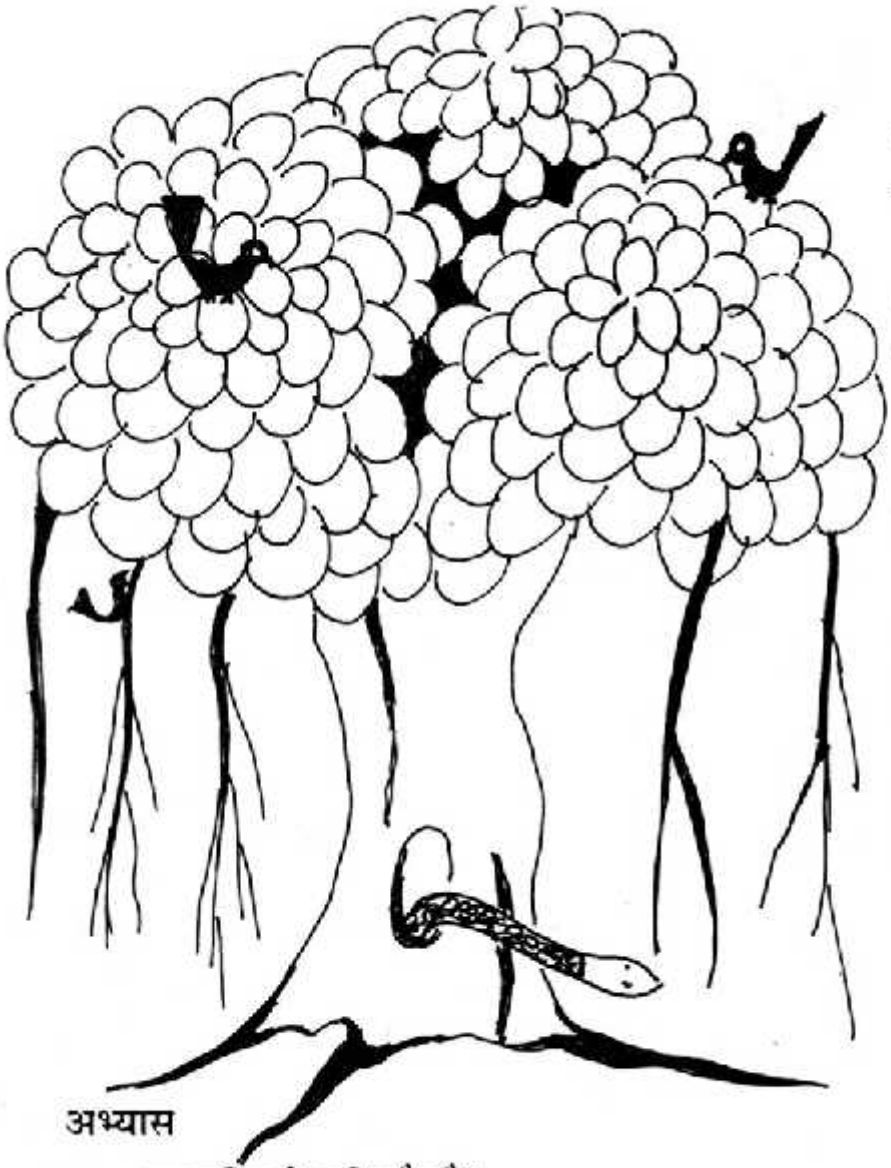

बरगद जी

दादा जी की पीढ़ी वाले बरगद जी
रहते हैं बस बैठे-ठाले बरगद जी!

कोटर में अजगर हैं, पक्षी डालों पर
पड़े हुए किन-किनको पाले बरगद जी!

हवा, पखेरू या राही की बातों को
सुनते मुंह पर डाले ताले बरगद जी!

जड़े जमाकर धरती की गहराई में
बुनते हैं डैनों के जाले बरगद जी!

हर आने-जाने वाले की आंखों में
देख रहे हैं आंखें डाले बरगद जी!

भगवती प्रसाद द्विवेदी

अभ्यास

1. *इस कविता के कवि कौन हैं?*
2. *बरगद जी कौन हैं? उनके बारे में कवि ने क्या-क्या कहा है?*
3. *इस बात से क्या समझ में आता है? "दादा जी की पीढ़ी वाले बरगद जी"*
4. *कवि ने बरगद की जड़ों के बारे में क्या लिखा है?*
5. *इन शब्दों का क्या मतलब है*
   बैठे- ठाले -
   मुँह पर डाले ताले - ; डैनों - ; आँखों में आँखें डाले
6. *तुमने कोई बरगद का पेड़ देखा है? उसका चित्र यहाँ बनाओ। उस पर तुम्हें कौन-कौन से पक्षी, कीड़े दिखे- उनके चित्र भी बनाओ। उसकी जड़ें कैसी हैं? उनके बारे में लिखो।*
7. *अगर यह बरगद चल सकता तो क्या-क्या करता, कहाँ जाता?*